विषय-सूची

समर्पण (३)

दो शब्द—डॉ० वासुदेवशरण (५)

प्रस्तावना—श्री राहुल सांकृत्यायन (१३)

निवेदन (१५)

विषय-सूची (१६)

प्रारम्भिक १–१०

अपभ्रंशों का प्रादुर्भाव—प्राचीन हिन्दी—रूपभेद—ग्वालियरी भाषा—पांडे जी का मत—राहुल जी का मत—ग्वालियरी और ब्रजभाषा—ब्रजभाषा और बुन्देलखण्डी आदि नामों से उत्पन्न भ्रम—मध्यदेश की भाषा के विकास के अध्ययन की आवश्यकता।

मध्यकालीन मध्यदेश ११–१६

मध्यदेश विषयक भ्रान्त धारणाएँ—मध्यकाल का मध्यदेश—राजशेखर—सोमदेव और मेरुतुङ्ग—कल्याणसिंह का अनंगरंग तथा अन्य ग्रन्थ—केशवदास—फ़क़ीरुल्ला सैफ़खां का मध्यदेश—सुदेश—भावभट्ट—बनारसीदास जैन—बुन्देलों का क्षेत्र—मध्यदेश का विघटन—भाषा के विवेचन पर प्रभाव।

मध्यदेश और ग्वालियर २०–२६

भाषा का केन्द्र—फ़क़ीरुल्ला का सूत्र—बीसलदेव रासो—जगनायक—तोमर और हिन्दी—वजही—ग्वालियरी भाषा।

हिन्दी की प्राचीन नाम परम्परा २७–३८

अपभ्रंश और देशी भाषा—अवहट्ठ—भाषा—मध्यदेशीय अपभ्रंश—मध्यदेश की भाषा—बनारसीदास जैन—भावभट्ट—शौरसेनी भाषा—ग्वालियरी भाषा—ग्वालियरी का गद्य—हितोपदेश—दक्षिण में ग्वालियरी—नाभा जी की जन्मभूमि ग्वालियर थी—जयकीर्ति—ब्रज भाषा।

मुसलमान और मध्यदेशीय भाषा ३६-५०

बोली और भाषा—हिन्दी के प्रारम्भिक केन्द्र—खुसरो का हिन्दी-स्तवन—मुल्लादाऊद के 'चन्दावन' की भाषा—दण्डी के आभीरादि—गूजर और तुग़लक—दखिनी का रूप—भाषा या गूजरी बोली—भाषा और दक्षिण—हिन्दुई भाषा, हिन्दवी या हिन्दी—दखिनी—हिन्दी, आर्यभाषा तथा नागरी।

ग्वालियरी और ब्रजभाषा ५१-६७

ग्वालियरी और ब्रज एक ही भाषा के दो नाम—पांडे जी का मत—पांडे जी द्वारा प्राप्त परिणाम—वार्ता का ब्रजमंडल—मथुरा मंडल और हिन्दी—ब्रज बोली—पुरुषोत्तम भाषा—ब्रज बोली की वृन्दावन में स्थापना—ब्रज बोली से ब्रज भाषा—भावावेश का परिणाम—ब्रजभाषा नाम और दक्षिण—विद्रोही बुन्देलखण्ड—केशवदास की नरभाषा—गोपालों का गोपगिरि—ग्वालियरी का तन-मन-धन संकल्प।

हिन्दी गेय साहित्य का मूल ६८-८६

संगीत और भाषा—अपभ्रंश और संगीत—सिद्ध और नाथ—जयदेव—पार्श्वदेव और मध्यदेशीय संगीत-मध्यदेश—चौदहवीं शताब्दी—मध्यदेश-पन्द्रहवीं शताब्दी—भारतीय संगीत पर ईरान का आक्रमण—ग्वालियर की संगीत को देन – हिन्दी की पद रचना को संगीत में मान्यता—ध्रुपद के पदों का रूप—ग्वालियर का पद-साहित्य—विष्णुदास – कबीर और विष्णुदास—संस्कृत शब्दों का प्रयोग क्यों—धर्म का भाषा पर प्रभाव—कबीर की भाषा—बैजू और बख्शू—ग्वालियरी संगीत और पद-साहित्य का विकेन्द्रीकरण—मुगल दरबार और ग्वालियरी संगीत—तानसेन—तानसेन का प्रारम्भिक जीवन—हरिदास की डागुर वाणी—सूरदास का संगीत और पद-साहित्य—ग्वालियरी भाषा ग्वालियरी संगीत की देन।

सूरदास की जन्म-भूमि ९०–१०६

सूर-साहित्य और ग्वालियर—सूर की भाषा—ब्रजभाषा और ब्रज बोली—सूरदास की जन्म-भूमि—सूर की भक्ति का रूप—ग्वालियर और सूरदास—मान की राजसभा—संगीत साधना की साक्षी—मार्नासंह की सहिष्णुता—भक्तविनोद की साक्षी—साहित्यलहरी का साक्ष्य—साहित्यलहरी का पद क्या वास्तव में प्रक्षिप्त है ?—प्रबल दच्छिन विप्रकुल—और यह नया गोपाचल ?—आईन-ए-अकबरी के रामदास और और सूरदास—थेघनाथ के गुरु रामदास—वार्त्ता का सांप्रदायिक ध्येय—सूर के संगीत, साहित्य और भाषा का मूल।

बल्लभकुल और बुन्देलखण्ड १०७–११५

अन्य पुष्टिमार्गी गायक—गोविन्द स्वामी—तानसेन और गोविन्द स्वामी—गोविन्द स्वामी की भाषा—आसकरन कछवाहा—तानसेन और ध्रुपद—मधुकरशाह बुन्देला—वल्लभ सम्प्रदाय और ग्वालियर।

'ग्वालियरी' नाम का विलोपन ११६–१२४

ग्वालियरी नाम के विलोपन की मूल भावना—ग्वालियरी नाम की भावना—मुगलों का प्रयास—वल्लभ-सम्प्रदाय—पुरषोत्तम भाषा—विट्ठलनाथ जी—मुगल दरबार और पुष्टि-मार्ग—अकबर के ममत्व का कारण—मेवाड़ और बुन्देल-खण्ड—मुगल दरबार में ग्वालियरी—अंग्रेज और ब्रजभाषा।

ग्वालियरी दोहे १२५–१३०

दोहा-साहित्य, प्रबन्धकाव्य ओर रीतिग्रंथ—वजही—कबीर की साखियाँ—कुशललाभ के दोहे—चतुर्भुजदास निगम—दोहा-साहित्य का मूल—बिहारीलाल।

पद्मावत, मानस और रामचंद्रिका की पृष्ठभूमि १३१–१५०

हिन्दी के प्रबन्धकाव्य—ईसवी पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्व

का प्रबन्ध-साहित्य—ग्वालियर का प्रबन्ध-साहित्य—वीरसिंह तोमर—वीरम तोमर—नयचन्द्र सूरि—पद्मनाभ कायस्थ—जैन संपर्क—डूँगरेन्द्रसिंह—गोस्वामी विष्णुदास—रइधू—रइधू का ग्वालियर—रइधू और डूँगरेन्द्रसिंह—जैन प्रभाव—कीर्तिसिंह—बुन्देले, परमार और तोमर—त्रिविक्रिम मिश्र—कल्याणसिंह और अनंगरंग—मानसिंह तोमर—मानिक कवि—थेघनाथ और भानुसिंह—काव्य-रचना के लिए बीड़ा—मानसिंह की विद्वत्सभा—दो मिश्र परिवार—मथुरा के चतुर्वेदी।

अविच्छिन्न परम्परा १५१–१५६

ओड़छा—इतिहास-काव्य—गोरेलाल—खड़गसेन—रीति-ग्रंथ—सुन्दरदास—कच्छ का लखपत—काव्य-भाषा का रूप—संविधान की हिन्दी।

उपसंहार १६०–१६६

अभी तक के प्राप्त निष्कर्ष—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा की स्थापनाएँ—उनकी उलटी गंगा—पं० रामचन्द्र शुक्ल और श्री किशोरीदास वाजपेयी की स्थापनाएँ—काव्य-भाषा की परख।

परिशिष्ट १६७

१. गोस्वामी विष्णुदास १६६

२. मानिक १७६

३. थेघनाथ १८३

४. अज्ञात लेखक (गद्य) १६१

५. सूरदास २०५

६. गोविन्द स्वामी २१३

७. आसकरण २१७

८. सहायक ग्रंथों की सूची २२३

६. सम्मतियाँ २२६